NAT-009-001653 Seat No. _____

B. R. S. (Sem. VI) (CBCS) Examination

March / April – 2017

Hindi : ELE-18 – ELT-624

(New Course)

Faculty Code : 009
Subject Code : 001653

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : सभी प्रश्नों के उत्तर सूचनानुसार दीजिए ।

१ खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य का मूल्यांकन कीजिए । १५

अथवा

१ 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए । १५

२ 'रश्मिरथी' के नायक कर्ण का चरित्र–चित्रण कीजिए । १५

अथवा

२ परशुराम का चरित्र–चित्रण कीजिए । १५

३ निम्नांकित में से किन्हीं **तीन** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : १५

(१) ''ले अमोध यह अस्त्र, काल को भी यह खा सकता है इसका कोई वार किसी पर विफल न जा सकता है । एक बार ही मगर काम तू इससे ले पायेगा, फिर यह तुरंत लौट कर मेरे पास चला जायेगा ।''

(२) ''कर्ण मुग्ध हो भक्तिभाव में मग्न हुआ–सा जाता है, कभी जटा पर हाथ फेरता, पीठ कभी सहलाता है चढ़े नहीं चींटियाँ बदन पर, पड़े नहीं तृंत पात कही कर्ण सजग है, उचट जाय गुरुवर की कच्ची नींद कहीं ।''

(३) ''सुध–बुध खो बैठी हुई समर–चिंतन में, कुंती व्याकुल हो उठी सोच कुछ मन में । हे राम ! नहीं क्या यह संयोग हटेगा ? सच मुच ही क्या कुंती का हृदय फटेगा ?''

(४) ''तू अवश्य क्षत्रिय है, पापी ! बता, न तो फल पायेगा, परशुराम के कठिन शाप से अभी भस्म हो जायेगा । क्षमा, क्षमा हे देव दयामय, गिरा कर्ण गुरु के पद पर । मुख विवर्त हो गया, अंग काँपने लगे भय से थर–थर ।''

(५) ''जाति ! हाय–री जाति ! कर्ण का हृदय क्षोभ से डोला कूपित सूर्य की ओर देख वह वीर क्रोध से बोला, जाति जाति रहते हैं, जिनकी पूँजी केवल पाखण्ड है, मैं क्या जानूँ जाति ? जाति है ये मेरे भुजदंड ।''

४ 'रश्मिरथी' खण्डकाव्य के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए । १५

अथवा

४ 'रश्मिरथी' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए । १५

५ दुर्योधन का चरित्र–चित्रण कीजिए । १०

अथवा

५ 'कृष्ण' का चरित्र–चित्रण कीजिए । १०